अतुल केशप

भारत होगा सबसे अहम साथी

भारतीय मूल के अमेरिकी राजनयिक का अमेरिका-भारत संबंधों के बारे में राष्ट्रपति बुश की दृष्टि को आगे बढ़ाने का प्रयास

लॉरिंडा कीज लौंग

अतुल केशप भारत स्थित अमेरिकी दूतावास में उप राजनीतिक काउंसलर हैं। उनको यकीन है कि अगली सदी तक अमेरिका से भारत के रिश्ते सबसे महत्वपूर्ण होने जा रहे हैं। वह एक ऐसे दृश्य की कल्पना करते हैं जब हर साल लाखों अमेरिकी और भारतीय एक-दूसरे के यहां आ-जा रहे हैं। उनका आना-जाना सिर्फ अपने परिवारों से मिलने-जुलने, कुछ खरीदने-बेचने, पढ़ने या घूमने के लिए ही नहीं, बल्कि किसी नए निवेश, अनुसंधान, इलाज, प्रेरणा पाने और साझा लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ एक-दूसरे के सहयोग से दुनिया को ज्यादा सुरक्षित, स्वतंत्र और संपन्न बनाने लिए भी एक-दूसरे के यहां आ-जा रहे हैं।

केशप कहते हैं कि, ''मेरा जीवन, शिक्षा, कॅरिअर, मेरी विरासत और मेरी जड़ें मुझे इस बात का भरोसा दिलाती हैं कि मुझे इस ख्वाब को साकार करने के लिए वह सब करना चाहिए, जो मैं कर सकता हूं। यह मेरी खुशकिस्मती है कि मैं ऐसे समय में भारत में हूं जब अमेरिका और भारत के रिश्ते एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं।''

केशप जब वर्ष 1994 में राजनयिक बने तो यह कुछ ऐसा ही था जैसे उन्होंने अपना पारिवारिक बिजनेस संभाल लिया हो। उनकी मां जो कैल्वर्ट ने विदेश सेवा के अपने पहले कार्यकाल 1956 से 1961 के दौरान भारत में अमेरिका के राजदूत एल्सवर्थ बंकर के साथ काम किया था। उनका ऑफिस केशप के मौजूदा ऑफिस से मात्र 30 मीटर दूर था। उनकी अगली पोस्टिंग लंदन में हुई, जहां उनकी मुलाकात केशप के पिता डॉ. केशप चंद्र सेन से हुई। डॉ. सेन ने बाद में अफ्रीका, मध्य और दक्षिण-पूर्व एशिया और यूरोप में संयुक्त राष्ट्र के लिए काम किया। अतुल की पत्नी कैरेन भी राजनयिक हैं। वह दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास में प्रेस अधिकारी के रूप में काम करती हैं। इस दंपत्ति के तीन बच्चे हैं और वे भी दिल्ली में ही रहते हैं।

एक राजनीतिक अधिकारी के रूप में केशप का काम भारत और अमेरिका के बीच आपसी समझ बढ़ाना और दोनों सरकारों को मिलकर काम करने में सहयोग करना है। केशप के मुताबिक, ''मैं इस बात से रोमांचित हो उठता हूं कि आज हम अंततः भारत के साथ ऐसे रिश्ते कायम कर रहे हैं जो भारतीय मूल का अमेरिकी नागरिक होने के नाते मेरी ख्वाहिश होती कि 30-40-50-60 साल पहले ही कायम हो जाने चाहिए थे।'' केशप 35 साल के हैं। उनका मानना है कि भारत और अमेरिका ने एक-दूसरे के खिलाफ न होते हुए भी कई सालों तक एक-दूसरे के प्रति बेरुखी दिखाई। अब भारतीय अमेरिका में बड़ी तादाद में रह रहे हैं, अमेरिकी कंपनियां भारत में बड़े पैमाने पर निवेश कर रही हैं और पढ़ाई तथा पर्यटन के लिए दोनों देशों के लोगों का एक-दूसरे के यहां आना-जाना शुरू हुआ है। आज दोनों मुल्क महसूस करते हैं कि वे एक भाषा में संवाद कायम कर सकते हैं, उनकी एक साझा विरासत और जीवन मूल्य हैं, दुनिया के बारे में उनका एक साझा नजरिया है और वे बहुत पहले एक-दूसरे के करीब आ सकते थे। केशप का मानना है कि यदि भारत और अमेरिका राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश की मार्च में हुई भारत यात्रा की विजन पर संजीदगी से अमल करें तो वे दुनिया को बेहतर बना देंगे, लोकतंत्र का प्रसार करेंगे, स्थिरता लाएंगे और दुनिया को मुक्त बाजार से मिलने वाली संपन्नता से रूबरू करवाएंगे। आज भारत एक लोकतांत्रिक, बहुधर्मी, बहुजातीय, सहिष्णु, उदार और मुक्त बाजार वाला स्थिर देश है। जो देश इस लक्ष्य को पाना चाहते हैं, उनको भारत से सबक लेना चाहिए। शायद तब वे कह सकेंगे- अरे, इस कामयाबी का राज यह है!

केशप का साबका ऐसे लोगों से भी पड़ता रहता है जो उनकी राय से इत्तफाक नहीं रखते। लेकिन वह इससे निराश नहीं होते और कहते हैं, ''मैं इसीलिए तो यहां हूं। मैं लोगों के बीच जाकर उनसे मतभेदों पर खुली चर्चा कर सकता हूं, उनकी शंकाओं को दूर करने का प्रयास कर सकता हूं।'' उनके मुताबिक, ''भारत में आज भी कई लोगों के लिए अमेरिका का मतलब वही है, जो वे टीवी पर देखते हैं। लेकिन यह हकीकत है कि अमेरिका अवसरों का देश है और लोग यहां की आजादी और अवसरों को दुनिया के कोने-कोने में देखना चाहते हैं। आज भारत के वे आईटी उद्यमी और अन्य लोग, जो खुद अपनी किस्मत लिखना चाहते हैं, अमेरिका में अपनी जिंदगी को बेहतर बनाने और अपना कौशल दिखाने के अवसर देख रहे हैं। इस मामले में कई लोग हमारी पिछली पीढ़ी के अगुवाओं से भी सबक ले रहे हैं।''

अरुण केशप

ऊपर: श्रीनगर की डल झील में शिकारा की सवारी का आनंद लेते अतुल केशप।

केशप का जन्म नाइजीरिया में एक अमेरिकी नागरिक के तौर पर हुआ था। तब उनके पिता वहीं तैनात थे। केशप ने अपनी जिंदगी के शुरू के 12 साल नाइजीरिया, लेसोथो, जाम्बिया, अफगानिस्तान और ऑस्ट्रिया में गुजारे। इसके बाद वह अगले 12 साल वर्जीनिया के कार्लोट्सेविले में रहे, जहां वर्जीनिया यूनिवर्सिटी से उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की। केशप कहते हैं, ''मैं चाहता था कि मेरी पहचान किसी एक जगह से जुड़ी हो और वर्जीनिया में बिताए इन 12 सालों ने

साभार: कैरेन केशप

ऊपर: अतुल केशप, उनकी मां जो कैल्वर्ट, कैरेन केशप, जेम्स, एमिली और कैरोलिन अप्रैल में राजस्थान में।

मुझे यह पहचान दी।'' उनकी मां और भाई अब भी वहां रहते हैं।

केशप के पिता अब एक अमेरिकी नागरिक हैं और मैसूर में रहते हैं। यह एक संयोग ही है कि केशप के पड़नाना ने वहां आज से सौ साल से भी पहले जनरल इलेक्ट्रिक के लिए शिवसमुद्रम जल-विद्युत परियोजना के निर्माण कार्य की देखरेख में मदद की थी। केशप के पिता का जन्म अविभाजित पंजाब के मुजफ्फरगढ़ में हुआ था। उन्होंने विभाजन से ठीक पहले लाहौर से अपनी पढ़ाई पूरी की। विभाजन की आंधी इस परिवार को अक्टूबर 1947 में दिल्ली ले आई। बाद में उनका परिवार पानीपत (हरियाणा) में बस गया। यूनिवर्सिटी की पढ़ाई उन्होंने दिल्ली से पूरी की। इसके बाद उन्होंने आठ साल तक शिमला में पंजाब सरकार की नौकरी की। फिर लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। वहीं केशप की मां से उनका मिलना हुआ और बाद में दोनों की शादी हो गई। केशप की मां मूल रूप से अमेरिका के कैरोलाइना की रहने वाली हैं। इस दंपत्ति ने संयुक्त राष्ट्र की नौकरी के दौरान 30 साल विभिन्न देशों में बिताए।

तब केशप का परिवार हर साल गर्मियों में कुछ हफ्ते अमेरिका और यूरोप में तथा कुछ हफ्ते भारत में बिताता था। केशप कहते हैं कि, ''इस तरह मैं अपनी विरासत के दोनों पक्षों को समझते हुए और उनसे तालमेल बैठाते हुए बड़ा हुआ।'' बचपन में अपने अमेरिकी लहजे और हिंदी की जानकारी न होने के कारण केशप को पानीपत में अपने चचेरे भाइयों के साथ क्रिकेट खेलते हुए या भारत में कहीं घूमते हुए कई बार ऐसा महसूस होता था मानो वह किसी अनजान देश में अजनबी लोगों के साथ हैं। ''लेकिन बतौर राजनयिक भारत आने से पहले मैंने नौ महीने का हिंदी का कोर्स किया और इस कोर्स की बदौलत यहां आने के बाद जैसी राहत मैंने महसूस की, वैसी पहले कभी नहीं की।'' केशप कहते हैं कि अगर आप अंग्रेजी बोलते हैं तो भारत में करीब तीन करोड़ लोगों से बात कर सकते हैं, लेकिन यदि आप थोड़ी-बहुत भी हिंदी बोल लेते हैं तो 30, 40, 50 करोड़ या इससे भी ज्यादा लोगों से बातचीत कर सकते हैं। इसलिए मैं अपनी टूटी-फूटी हिंदी से खुश हूं और कोशिश करता हूं कि इसे ज्यादा से ज्यादा बोलूं, भले ही इससे सुनने वालों को कुछ कष्ट ही क्यों न होता हो। □